International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 14-12-2025, Accepted: 13-01-2026, Published: 28-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 58-62

दक्षिण एशिया में भारत की विदेश नीति का रूपांतरण: पड़ोसी प्रथम दृष्टिकोण से बहु–संरेखण की रणनीति तक (2014–2024)

डॉ विवेक कुमार राय[1], अभिषेक कुमार मणिक[2]
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर ईश्वर, शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारत की पड़ोसी देशों के प्रति विदेश नीति में वर्ष 2014 के बाद से महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए हैं। "नेबरहुड फर्स्ट" की अवधारणा से शुरू हुई यह नीति रणनीतिक व्यावहारिकता, भू–राजनीतिक चुनौतियों और बहुपक्षीय समन्वय के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है [1]। यह शोध पत्र 2014 से 2024 के दशक में भारत की पड़ोसी–केंद्रित विदेश नीति का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें नेहरूवियन आदर्शवाद से लेकर मोदी–युग की रणनीतिक स्वायत्तता तक की ऐतिहासिक निरंतरता और परिवर्तन का परीक्षण किया गया है। पाकिस्तान, चीन, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, म्यांमार, अफगानिस्तान और मालदीव के साथ द्विपक्षीय संबंधों की जटिलताओं का विस्तृत मूल्यांकन किया गया है। साथ ही, सार्क की निष्क्रियता और बिम्सटेक के उभार जैसे बहुपक्षीय मंचों की भूमिका का भी आकलन किया गया है। चीन की बेल्ट एंड रोड पहल के संदर्भ में भारत की प्रतिक्रिया और आर्थिक एकीकरण बनाम सुरक्षा प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन की चुनौतियों को रेखांकित किया गया है। अंत में, नीतिगत सिफारिशों के साथ यह शोध भारत की पड़ोसी नीति को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाने का मार्ग सुझाता है।

मूल शब्द: भारतीय विदेश नीति, नेबरहुड फर्स्ट, रणनीतिक स्वायत्तता, दक्षिण एशिया, सार्क, बिम्सटेक, चीन–फैक्टर, द्विपक्षीय संबंध, भू–राजनीति

प्रस्तावना
दक्षिण एशिया विश्व का सबसे घनी आबादी वाला और सांस्कृतिक रूप से विविधतापूर्ण क्षेत्र है। भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत इस क्षेत्र का केंद्रीय राष्ट्र है। स्वतंत्रता के बाद से ही भारत की विदेश नीति में पड़ोसी देशों को विशेष महत्व दिया गया है, परंतु यह संबंध सदैव जटिल और चुनौतीपूर्ण रहे हैं। भारत की "बड़े भाई" की छवि और छोटे पड़ोसी देशों का संदेह इस क्षेत्रीय गतिशीलता की प्रमुख विशेषता रही है [2]।
इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण, चीन के आर्थिक और सैन्य उभार, तथा अमेरिका–चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने दक्षिण एशिया के रणनीतिक महत्व को और भी बढ़ा दिया है [3]। हिंद महासागर क्षेत्र में भू–राजनीतिक और भू–आर्थिक प्रतिस्पर्धा तीव्र हुई है। इस पृष्ठभूमि में वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी सरकार के गठन के बाद भारत की पड़ोसी नीति में नया दृष्टिकोण सामने आया। "नेबरहुड फर्स्ट" की नीति के तहत भारत ने अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों को प्राथमिकता देने की घोषणा की।

ऐतिहासिक विकास: नेहरू से मोदी तक
नेहरूवियन आदर्शवाद और पंचशील का युग
स्वतंत्रता के बाद प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति में आदर्शवाद और नैतिकता को प्रमुखता दी। पंचशील के पाँच सिद्धांत—एक–दूसरे की प्रादेशिक अखंडता और सार्वभौमिकता का सम्मान, परस्पर अनाक्रमण, एक–दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता और परस्पर लाभ, तथा शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व—भारत–चीन संबंधों की नींव बने। गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाकर भारत ने शीत युद्ध के दौर में तीसरी दुनिया के देशों का नेतृत्व किया। परंतु 1962 के भारत–चीन युद्ध ने नेहरू के आदर्शवाद को गहरा आघात पहुँचाया। चीन ने अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन में भारतीय क्षेत्रों पर हमला किया। इस पराजय ने भारत की रक्षा तैयारियों और विदेश नीति की यथार्थवादी समीक्षा को अपरिहार्य बना दिया। पाकिस्तान के साथ कश्मीर विवाद भी नेहरू काल की एक प्रमुख चुनौती रही। 1947–48 और 1965 में दो युद्ध हुए, जिन्होंने भारत–पाकिस्तान संबंधों को स्थायी शत्रुता की दिशा में धकेल दिया [4]।

इंदिरा गांधी और यथार्थवादी कूटनीति
इंदिरा गांधी के कार्यकाल में भारत की विदेश नीति अधिक यथार्थवादी और निर्णायक बनी। 1971 का बांग्लादेश मुक्ति युद्ध भारत की क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापना का निर्णायक क्षण था। भारत ने सैन्य हस्तक्षेप कर पूर्वी पाकिस्तान को मुक्त कराया और बांग्लादेश का निर्माण हुआ। 1972 के शिमला समझौते ने भारत–पाकिस्तान संबंधों में "द्विपक्षीयता" के सिद्धांत को स्थापित किया। 1974 में भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया, जो क्षेत्रीय शक्ति के रूप में भारत के आत्मविश्वास का प्रतीक था।
इस दौर में भारत ने छोटे पड़ोसियों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप की नीति भी अपनाई। 1975 में सिक्किम का भारत में विलय इसका उदाहरण है। इन कदमों ने भारत की "बड़े भाई" की छवि को और मजबूत किया, जिससे छोटे पड़ोसियों में असुरक्षा और संदेह बढ़ा।

राजीव गांधी और क्षेत्रीय सहयोग की शुरुआत
राजीव गांधी के कार्यकाल में 1985 में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की स्थापना हुई। यह दक्षिण एशिया में आर्थिक और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देने का एक महत्वाकांक्षी प्रयास था। परंतु भारत–पाकिस्तान के तनाव और राजनीतिक मतभेदों ने सार्क को प्रभावी बनने से रोका था। 1987 में भारत ने श्रीलंका में शांति सेना (आईपीकेएफ) भेजी। यह हस्तक्षेप तमिल विद्रोहियों और श्रीलंकाई सरकार के बीच शांति स्थापित करने के उद्देश्य से किया गया था। परंतु यह मिशन विफल रहा और 1990 में भारतीय सेना को वापस बुलाना पड़ा। इस अनुभव ने भारत को यह सबक दिया कि पड़ोसी देशों के आंतरिक संघर्षों में सैन्य हस्तक्षेप जोखिमपूर्ण और अनुत्पादक हो सकता है।

1991 के आर्थिक सुधारों ने भारत की विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति को महत्व दिया [5]। "लुक ईस्ट" नीति की शुरुआत हुई, जिसने दक्षिण पूर्व एशिया के साथ संबंधों पर जोर दिया।

गुजराल सिद्धांत और वाजपेयी का शांति प्रयास

प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल ने 1996 में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसे "गुजराल सिद्धांत" के नाम से जाना जाता है [6]। इसके तहत भारत ने छोटे पड़ोसियों के साथ असममित उदारता का सिद्धांत अपनाया। इसका अर्थ था कि भारत पारस्परिकता की माँग किए बिना पड़ोसियों को रियायतें देगा। यह सिद्धांत विश्वास निर्माण और सद्भावना बढ़ाने के उद्देश्य से था। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान के साथ संबंधों को सुधारने का साहसिक प्रयास किया। 1999 में उन्होंने बस से लाहौर की यात्रा की और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ शांति घोषणा पर हस्ताक्षर किए। परंतु कुछ महीनों बाद ही कारगिल युद्ध छिड़ गया, जिसने संवाद की प्रक्रिया को तोड़ दिया। 2001 में भारतीय संसद पर हमले ने स्थिति को और बिगाड़ दिया।

मनमोहन सिंह और आर्थिक कूटनीति

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल (2004–2014) में भारत ने पड़ोसियों के साथ आर्थिक सहयोग पर जोर दिया। बांग्लादेश के साथ भूमि सीमा समझौते की दिशा में काम शुरू हुआ। पाकिस्तान के साथ समग्र संवाद की प्रक्रिया चली, परंतु 2008 के मुंबई हमलों ने इसे पुनः ठप कर दिया। नेपाल में राजशाही के अंत और गणतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना के दौरान भारत की भूमिका विवादास्पद रही। माओवादियों के उभार और संविधान निर्माण की प्रक्रिया में भारत ने सक्रिय रुचि दिखाई, जिसे कई नेपाली राजनेताओं ने हस्तक्षेप माना।

मोदी युग: नेबरहुड फर्स्ट से रणनीतिक व्यावहारिकता तक (2014–2024)

मई 2014 में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के साथ ही भारत की पड़ोसी नीति में नई ऊर्जा और दृष्टिकोण दिखा। शपथ ग्रहण समारोह में सभी सार्क देशों के नेताओं को आमंत्रित करना एक प्रतीकात्मक लेकिन महत्वपूर्ण संकेत था। "नेबरहुड फर्स्ट" और "सागर" (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) जैसी अवधारणाएँ प्रस्तुत की गईं। परंतु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि पड़ोसियों के साथ संबंधों में चुनौतियाँ जटिल हैं। 2016 में उरी हमले के बाद भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक की। 2019 में पुलवामा हमले के बाद बालाकोट में एयर स्ट्राइक हुई। ये कार्रवाइयाँ भारत की आक्रामक रक्षा रणनीति का संकेत थीं [7]।

2020 में गलवान घाटी में भारत–चीन के बीच हिंसक झड़प हुई, जिसमें भारतीय सैनिक शहीद हुए [8]। इसके बाद दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ा और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सैन्य तैनाती तीव्र हो गई। 2021 में अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की वापसी और तालिबान के सत्ता में आने ने भारत की रणनीतिक स्थिति को कमजोर किया।

मालदीव में 2024 में "इंडिया आउट" अभियान और राष्ट्रपति मुइज़्ज़ू की चीन–समर्थक नीति ने भारत के लिए चुनौती खड़ी की। परंतु बाद में कूटनीतिक प्रयासों से स्थिति में सुधार आया।

सार्क की निष्क्रियता के बाद भारत ने बिम्सटेक (बंगाल की खाड़ी बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल) को प्राथमिकता दी। यह पाकिस्तान को बाहर रखकर क्षेत्रीय सहयोग का एक वैकल्पिक मंच बनाने का प्रयास था।

द्विपक्षीय संबंधों का विश्लेषण

पाकिस्तान: शत्रुता की विरासत

भारत–पाकिस्तान संबंध विभाजन की हिंसक स्मृति, कश्मीर विवाद और सीमा–पार आतंकवाद से ग्रस्त हैं। कश्मीर दोनों देशों के बीच मुख्य विवाद बिंदु बना हुआ है। पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी संगठन लश्कर–ए–तैयबा और जैश–ए–मोहम्मद ने भारत में अनेक हमले किए हैं। सिंधु जल संधि एकमात्र समझौता है जो दोनों देशों के बीच युद्धों के बावजूद बना रहा [9]।

लाहौर शिखर सम्मेलन, आगरा शिखर सम्मेलन और समग्र संवाद जैसे शांति प्रयास हुए, परंतु पठानकोट, उरी और पुलवामा जैसे आतंकी हमलों ने संवाद को बार–बार तोड़ा। वर्तमान में भारत की "आतंकवाद समाप्त होने तक कोई बातचीत नहीं" की नीति कठोर है। यह दृष्टिकोण अल्पकालिक राजनीतिक लाभ तो दे सकता है, परंतु दीर्घकालिक शांति के लिए ट्रैक–टू कूटनीति, व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करना आवश्यक है [10]।

चीन: प्रतिस्पर्धा और सहयोग का द्वंद्व

भारत–चीन संबंध विश्व की दो सबसे बड़ी उभरती शक्तियों के बीच का सबसे जटिल समीकरण है। सीमा विवाद—अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिनकृदोनों देशों के बीच मुख्य मुद्दा है। तिब्बत और दलाई लामा का प्रश्न, भारत की परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में सदस्यता पर चीन का विरोध, और चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे के प्रति भारत की आपत्ति संबंधों को तनावपूर्ण बनाती हैं। चीन की बेल्ट एंड रोड पहल में भारत ने भाग नहीं लिया क्योंकि चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से गुजरता है। 2020 की गलवान घटना ने संबंधों को नया निम्न बिंदु दिया। परंतु आर्थिक परस्पर–निर्भरता भी एक वास्तविकता है—भारत–चीन द्विपक्षीय व्यापार सौ अरब डॉलर से अधिक है, हालाँकि व्यापार असंतुलन भारत के विरुद्ध है।

भारत "प्रतिस्पर्धा और सहयोग" के सूत्र पर चल रहा है। क्वाड (भारत–अमेरिका–जापान–ऑस्ट्रेलिया) में भारत की भागीदारी चीन को संतुलित करने का प्रयास है। परंतु भारत सीधे चीन का सैन्य मुकाबला करने में असमर्थ है और आर्थिक विकल्प प्रदान करने में भी संसाधनों की कमी है।

बांग्लादेश: सफलता की कहानी

भारत–बांग्लादेश संबंध पड़ोसी नीति में एक सफल उदाहरण माने जाते हैं। 2015 का भूमि सीमा समझौता एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी, जिसने दशकों पुराने सीमा विवाद को सुलझाया। बांग्लादेश–भूटान–भारत–नेपाल मोटर वाहन समझौता और बंदरगाह पहुँच ने संपर्क को बढ़ाया। सुरक्षा सहयोग भी मजबूत है। आतंकवाद–रोधी सहयोग और पूर्वोत्तर भारत में विद्रोह प्रबंधन में बांग्लादेश की भूमिका सराहनीय है। परंतु तीस्ता जल–बंटवारा का मुद्दा अभी लंबित है। रोहिंग्या संकट, अवैध प्रवासन और जल विवाद चुनौतियाँ बनी हुई हैं। फिर भी, यह संबंध दर्शाता है कि परस्पर विश्वास और व्यावहारिक सहयोग से पड़ोसियों के साथ मजबूत संबंध बनाए जा सकते हैं [11]।

श्रीलंका: प्रथम उत्तरदाता की भूमिका

श्रीलंका के साथ भारत के संबंध लिट्टे (तमिल विद्रोहियों) के मुद्दे और आईपीकेएफ हस्तक्षेप की विरासत से प्रभावित हैं। भारत में तमिल भावनाएँ भारत की नीति को प्रभावित करती हैं। 2022 के आर्थिक संकट के दौरान भारत ने श्रीलंका को तत्काल सहायता प्रदान की—ईंधन, खाद्य पदार्थ और ऋण सुविधाएँ। यह भारत की "प्रथम उत्तरदाता" भूमिका को रेखांकित करता है [12]।

परंतु चीन का प्रभाव बढ़ रहा है। हंबनटोटा बंदरगाह, जिसे श्रीलंका ने ऋण चुकाने में असमर्थता के कारण चीन को 99 वर्षों के लिए पट्टे पर दे दिया, "ऋण–जाल कूटनीति" का उदाहरण माना जाता है। भारत को आर्थिक सहायता के साथ–साथ सांस्कृतिक और लोक–संपर्क को भी मजबूत करना होगा।

नेपाल: सांस्कृतिक निकटता और राजनीतिक तनाव

भारत–नेपाल संबंध खुली सीमा, रोटी–बेटी के रिश्ते और गोरखा भर्ती की परंपरा से विशिष्ट हैं। परंतु 2015 में नेपाल के नए संविधान के बाद मधेसी विरोध के दौरान लगाए गए नाकेबंदी के आरोपों ने संबंधों को क्षतिग्रस्त किया। नेपाल ने इसे भारत का हस्तक्षेप माना। चीन का प्रभाव नेपाल में बढ़ रहा है। बेल्ट एंड रोड पहल में नेपाल की भागीदारी भारत के लिए चिंता का विषय है। नेपाल अपनी विदेश नीति में विविधीकरण चाहता है, जो स्वाभाविक है। भारत को सांस्कृतिक संबंधों का सम्मान करते हुए नेपाल की संप्रभुता का आदर करना होगा और राजनीतिक दबाव की जगह आर्थिक सहयोग बढ़ाना होगा।

भूटान: सबसे मजबूत साझेदारी

भारत–भूटान मैत्री संधि और रक्षा सहयोग इस संबंध की नींव हैं। 2017 के डोकलाम गतिरोध में भारत ने भूटान के पक्ष में चीन का सामना किया। यह भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण था। जल–विद्युत परियोजनाओं में आर्थिक सहयोग भी मजबूत है। परंतु यह प्रश्न उठता है कि क्या यह संबंध दीर्घकालिक रूप से टिकाऊ है या भूटान भी अपनी विदेश नीति में विविधीकरण चाहेगा। भूटान ने हाल के वर्षों में चीन के साथ सीमा वार्ता शुरू की है। भारत को इसे सकारात्मक रूप से देखना चाहिए और भूटान की स्वायत्तता का सम्मान करना चाहिए।

म्यांमार: एक्ट ईस्ट की कड़ी

म्यांमार भारत की "एक्ट ईस्ट" नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह आसियान तक संपर्क का प्रवेश द्वार है। सुरक्षा सहयोग में पूर्वोत्तर के विद्रोहियों के विरुद्ध संयुक्त अभियान शामिल हैं। रोहिंग्या संकट मानवीय और सुरक्षा दोनों चिंताओं को उठाता है। 2021 के सैन्य तख्तापलट के बाद भारत की "प्रतीक्षा और देखो" की नीति विवादास्पद रही। लोकतंत्र बनाम स्थिरता के बीच भारत दुविधा में है। लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता और रणनीतिक हितों के बीच संतुलन स्थापित करना चुनौतीपूर्ण है।

अफगानिस्तान: रणनीतिक असफलता

भारत ने अफगानिस्तान में विकास साझेदारी में महत्वपूर्ण योगदान दिया—बुनियादी ढाँचा, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा। परंतु 2021 में तालिबान के सत्ता में आने के बाद भारत की स्थिति कमजोर हुई। पाकिस्तान और चीन का प्रभाव बढ़ा है। भूमि–बंद अफगानिस्तान तक भारत की पहुँच ईरान के चाबहार बंदरगाह के माध्यम से संभव है, परंतु यह मार्ग भी चुनौतीपूर्ण है। भारत को तालिबान के साथ व्यावहारिक जुड़ाव और क्षेत्रीय साझेदारों के साथ समन्वय की जरूरत है।

मालदीव: लघु द्वीप राष्ट्रों की चुनौती

मालदीव हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। 2024 में "इंडिया आउट" अभियान और राष्ट्रपति मुइज़्ज़ू का चीन–समर्थक रुख भारत के लिए झटका था। परंतु कूटनीतिक प्रयासों से संबंधों में सुधार आया। यह घटना दर्शाती है कि छोटे द्वीपीय राष्ट्रों में भारत की सॉफ्ट पावर और चीन की आर्थिक शक्ति के बीच प्रतिस्पर्धा तीव्र है। भारत को आर्थिक सहायता के साथ–साथ राजनीतिक संवेदनशीलता भी दिखानी होगी।

बहुपक्षीय संस्थाएँ और क्षेत्रीय सहयोग

सार्क की निष्क्रियता

1985 में स्थापित दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन दक्षिण एशिया में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया था। परंतु यह संगठन अपने उद्देश्यों में काफी हद तक विफल रहा है। पाकिस्तान द्वारा कश्मीर मुद्दे पर चर्चा की मनाही और भारत–पाकिस्तान के बीच गहरे मतभेदों ने सार्क को प्रभावहीन बना दिया।

2016 के उरी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान में होने वाले सार्क शिखर सम्मेलन का बहिष्कार किया। बांग्लादेश, भूटान और अफगानिस्तान ने भी भारत का साथ दिया। तब से सार्क का कोई शिखर सम्मेलन नहीं हुआ है। यह संगठन वस्तुतः निष्क्रिय हो गया है। सार्क की विफलता के कई कारण हैं। संस्थागत कमजोरी, धन की कमी, और सबसे महत्वपूर्ण—राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव। जब तक भारत–पाकिस्तान संबंध सुधरते नहीं, सार्क को पुनर्जीवित करना कठिन है।

बिम्सटेक का उभार

सार्क की विफलता के बाद भारत ने बंगाल की खाड़ी बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक) को प्राथमिकता दी। इसमें भारत, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार और थाईलैंड शामिल हैं। पाकिस्तान इसमें नहीं है, जो भारत के लिए रणनीतिक लाभदायक है [13]।

बिम्सटेक व्यापार, संपर्क, आतंकवाद–रोधी सहयोग और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में काम करता है। 2014 के बाद भारत ने बिम्सटेक को मजबूत करने में सक्रिय भूमिका निभाई है। परंतु चुनौतियाँ हैंकृकार्यान्वयन की कमी, धन की समस्या, और सदस्य देशों के बीच प्राथमिकताओं में भिन्नता दिखाई दिया। बिम्सटेक को प्रभावी बनाने के लिए संस्थागत सुदृढ़ीकरण, नियमित शिखर सम्मेलन, और ठोस परियोजनाओं की जरूरत है। भारत को इसमें नेतृत्वकारी भूमिका निभानी होगी।

अन्य बहुपक्षीय मंच

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) में भारत और पाकिस्तान दोनों सदस्य हैं। यह मंच सुरक्षा सहयोग पर केंद्रित है, परंतु भारत–पाकिस्तान के बीच संवाद के लिए यह प्रभावी मंच नहीं बन सका है। चीन और रूस के प्रभुत्व के कारण भारत की भूमिका सीमित है। क्वाड (भारत–अमेरिका–जापान–ऑस्ट्रेलिया) भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने का प्रयास है। परंतु इससे भारत के छोटे पड़ोसी देश असहज महसूस कर सकते हैं, क्योंकि वे चीन और भारत के बीच संतुलन बनाना चाहते हैं।

हिंद महासागर रिम संघ (आईओआरए) समुद्री सुरक्षा और व्यापार सहयोग पर केंद्रित है। भारत इसमें सक्रिय है और "सागर" (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) की अवधारणा को बढ़ावा देता है [15]।

उप–क्षेत्रीय ढाँचे

बांग्लादेश–भूटान–भारत–नेपाल मोटर वाहन समझौता (बीबीआईएन) सड़क संपर्क को बढ़ावा देने का प्रयास है। परंतु भूटान ने अभी तक इसे पूरी तरह लागू नहीं किया है। मेकांग–गंगा सहयोग भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच संबंधों को मजबूत करने का माध्यम है। ये उप–क्षेत्रीय ढाँचे लचीले हैं और विशिष्ट मुद्दों पर केंद्रित होते हैं। भारत को इन्हें और मजबूत करना चाहिए।

चीन–फैक्टर और भारत की प्रतिक्रिया

बेल्ट एंड रोड पहल का प्रभाव

चीन की बेल्ट एंड रोड पहल (बीआरआई) एक विशाल बुनियादी ढाँचा और निवेश परियोजना है जो एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ती है। इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) है, जो पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से गुजरता है। इसलिए भारत ने बीआरआई का विरोध किया है और इसमें भाग नहीं लिया [16]। परंतु भारत के अन्य पड़ोसी देश

बीआरआई में शामिल हो गए हैं। श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश और मालदीव में चीन की बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। चीन की "ऋण–जाल कूटनीति" की आलोचना की जाती है, जिसमें देशों को भारी ऋण देकर उन्हें आर्थिक और राजनीतिक रूप से नियंत्रित किया जाता है। हंबनटोटा बंदरगाह इसका सबसे बड़ा उदाहरण है [17]।

स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स रणनीति

चीन की "मोतियों की माला" रणनीति हिंद महासागर में बंदरगाहों और सुविधाओं का नेटवर्क बनाना है। ग्वादर (पाकिस्तान), हंबनटोटा (श्रीलंका), चटगाँव (बांग्लादेश) और अन्य बंदरगाह इसमें शामिल हैं। इससे चीन को सामरिक लाभ मिलता है और भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए चुनौती बनती है।

भारत ने इसके जवाब में "हीरों का हार" रणनीति प्रस्तावित की, जिसमें अंडमान–निकोबार द्वीप समूह, मॉरीशस, सेशेल्स और अन्य द्वीपों के साथ सुरक्षा सहयोग शामिल है।

भारत की प्रतिक्रिया: सागरमाला और चाबहार

भारत ने सागरमाला परियोजना के तहत अपने बंदरगाहों का आधुनिकीकरण और विकास किया है। ईरान के चाबहार बंदरगाह में भारत का निवेश अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुँच का वैकल्पिक मार्ग प्रदान करता है। अंतर्राष्ट्रीय उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारा (आईएनएसटीसी) भी इसी दिशा में कदम है। एक्ट ईस्ट नीति और इंडो–पैसिफिक दृष्टिकोण भारत की व्यापक रणनीति के हिस्से हैं। क्वाड के माध्यम से भारत अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर चीन को संतुलित करने का प्रयास कर रहा है [18]।

विश्लेषण: क्या भारत प्रतिस्पर्धा कर सकता है?

यह स्वीकार करना होगा कि भारत आर्थिक रूप से चीन से प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ है। चीन की अर्थव्यवस्था भारत से पाँच गुना बड़ी है। चीन के पास विशाल विदेशी मुद्रा भंडार और निवेश क्षमता है। परंतु भारत का लाभ "गुणवत्ता बनाम मात्रा" में है। भारत लोकतांत्रिक शासन, पारदर्शिता और सतत विकास की पेशकश कर सकता है। भारत की सॉफ्ट पावरकृसांस्कृतिक संबंध, भाषा, धर्म, बॉलीवुडकृभी महत्वपूर्ण संसाधन है। भारत को चीन का सैन्य रूप से मुकाबला करने की जगह आर्थिक विकल्प प्रदान करने पर ध्यान देना चाहिए। छोटे पड़ोसियों को यह विश्वास दिलाना होगा कि भारत के साथ साझेदारी दीर्घकालिक, पारदर्शी और लाभदायक है [19]।

आर्थिक एकीकरण और सॉफ्ट पावर

व्यापार और निवेश की स्थिति

दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) की सफलता सीमित रही है। अंतर–क्षेत्रीय व्यापार दक्षिण एशिया में केवल पाँच प्रतिशत के आसपास है, जो दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में बहुत कम है। द्विपक्षीय व्यापार में असंतुलन, गैर–टैरिफ बाधाएँ और राजनीतिक तनाव व्यापार को बाधित करते हैं।

भारत विकास साझेदार के रूप में अनुदान और ऋण सुविधाएँ (लाइन्स ऑफ क्रेडिट) प्रदान करता है। बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका और अफगानिस्तान में भारत ने बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में निवेश किया है। परंतु परियोजनाओं के कार्यान्वयन में देरी और नौकरशाही बाधाएँ समस्या बनी हुई हैं।

संपर्क परियोजनाएँ

सड़क, रेल, हवाई और डिजिटल संपर्क क्षेत्रीय एकीकरण की कुंजी है। बीबीआईएन गलियारा, भूमि बंदरगाह और सीमा हाट (सीमावर्ती बाजार) संपर्क बढ़ाने के प्रयास हैं। भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग दक्षिण पूर्व एशिया के साथ संपर्क स्थापित करता है। डिजिटल संपर्क में भी भारत सक्रिय है। "डिजिटल इंडिया" पहल को क्षेत्रीय स्तर पर बढ़ावा दिया जा रहा है। डिजिटल भुगतान, ई–गवर्नेंस और साइबर सुरक्षा में सहयोग हो रहा है।

ऊर्जा सहयोग

भूटान और नेपाल के साथ जल–विद्युत सहयोग भारत की ऊर्जा नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत भूटान से बिजली खरीदता है और नेपाल के साथ भी इसी तरह के समझौते हैं। बिजली ग्रिड का एकीकरण क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाता है। नवीकरणीय ऊर्जा साझेदारी भी विकसित हो रही है।

भारत की सॉफ्ट पावर

भारत की सॉफ्ट पावर दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण संसाधन है। बॉलीवुड की लोकप्रियता, योग और आयुर्वेद का वैश्विक आकर्षण, भारतीय शास्त्रीय कला और बौद्ध तीर्थस्थल सांस्कृतिक कूटनीति के साधन हैं।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देती है। शैक्षिक आदान–प्रदान—छात्रवृत्तियाँ, आईटीईसी कार्यक्रम (भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग)—युवाओं के बीच संबंध मजबूत करते हैं। पड़ोसी देशों में भारतीय मूल के लोग सांस्कृतिक सेतु का काम करते हैं। परंतु सॉफ्ट पावर की सीमाएँ भी हैं। राजनीतिक तनाव, आर्थिक असंतोष और "बड़े भाई" की छवि सॉफ्ट पावर को कमजोर कर सकती है। सॉफ्ट पावर को हार्ड पावर (सैन्य और आर्थिक) के साथ संतुलित करना जरूरी है।

चुनौतियाँ और सीमाएँ

आंतरिक राजनीति का दबाव

कश्मीर और पूर्वोत्तर विद्रोह जैसे आंतरिक मुद्दे भारत की विदेश नीति को बाधित करते हैं। घरेलू राजनीति अक्सर विदेश नीति पर हावी हो जाती है। जनमत और मीडिया का दबाव सरकार को कठोर रुख अपनाने के लिए मजबूर करता है। चुनावी राजनीति में "राष्ट्रवाद" का इस्तेमाल पड़ोसियों के साथ संवाद को कठिन बनाता है।

पाकिस्तान–फैक्टर की निरंतरता

पाकिस्तान का सार्क में वीटो और आतंकी हमलों के बाद संवाद का टूटना क्षेत्रीय सहयोग को कमजोर करता है। भारत–पाकिस्तान के बीच विश्वास का अभाव समूची दक्षिण एशियाई नीति को प्रभावित करता है। जब तक यह मुद्दा सुलझता नहीं, क्षेत्रीय एकीकरण सीमित रहेगा।

चीन की बढ़ती शक्ति

आर्थिक क्षमता में भारत–चीन की खाई बड़ी है। छोटे पड़ोसी देश चीन की ओर इसलिए झुकते हैं क्योंकि वह तेजी से बुनियादी ढाँचा प्रदान करता है। भारत के पास समान आर्थिक संसाधन नहीं हैं। चीन की सैन्य शक्ति भी भारत से अधिक है।

विश्वास घाटा और इतिहास का बोझ

1971 (बांग्लादेश), आईपीकेएफ (श्रीलंका), 2015 नाकाबंदी (नेपाल)—ऐतिहासिक घटनाएँ विश्वास घाटे को बढ़ाती हैं। छोटे पड़ोसी भारत को "बड़े भाई" के रूप में देखते हैं जो हस्तक्षेप करता है। इस छवि को बदलना आसान नहीं है।

कार्यान्वयन की कमी

भारत द्वारा घोषित परियोजनाओं में देरी आम है। नौकरशाही बाधाएँ, धन की कमी और समन्वय की कमी इसके कारण हैं। चीन तेजी से परियोजनाएँ पूरी करता है, जबकि भारत की परियोजनाएँ वर्षों लटकी रहती हैं। यह भारत की विश्वसनीयता को नुकसान पहुँचाता है।

निष्कर्ष और नीतिगत सुझाव

भारत की पड़ोसी–केंद्रित विदेश नीति में निरंतरता और परिवर्तन दोनों दिखाई देते हैं। पंचशील और गुटनिरपेक्षता की भावना अभी भी प्रासंगिक है, परंतु रणनीतिक व्यावहारिकता और बहुपक्षीय समन्वय ने नई दिशा दी है। 2014 के बाद "नेबरहुड फर्स्ट" नीति ने पड़ोसियों को प्राथमिकता दी, परंतु चुनौतियाँ जटिल और गहरी हैं। प्रत्येक पड़ोसी के साथ संबंध अद्वितीय है। पाकिस्तान और चीन के साथ संबंध संघर्षपूर्ण हैं, जबकि बांग्लादेश और भूटान के साथ सहयोगपूर्ण। "एक आकार सभी के लिए" दृष्टिकोण नहीं चलेगा। प्रत्येक देश की विशिष्ट चिंताओं और आकांक्षाओं को समझना होगा [20]।

चीन–फैक्टर सबसे बड़ी चुनौती है, परंतु इसे केवल खतरे के रूप में नहीं देखना चाहिए। प्रतिस्पर्धी सहयोग का मॉडल अपनाकर भारत और चीन दोनों क्षेत्र में स्थिरता बनाए रख सकते हैं। सार्क की विफलता स्पष्ट है और नए बहुपक्षीय मंचों—विशेषकर बिम्सटेक—को मजबूत करने की जरूरत है।

नीतिगत सिफारिशें

संस्थागत सुधार: सार्क को पुनर्जीवित करने के प्रयास बंद करें और बिम्सटेक को मजबूत बनाएँ। उप–क्षेत्रीय समूहों (बीबीआईएन) को परिचालन योग्य बनाएँ। नियमित शिखर सम्मेलन, सचिवालय की मजबूती और वित्तीय संसाधनों में वृद्धि आवश्यक है।

आर्थिक कूटनीति: व्यापार बाधाओं को कम करें और मुक्त व्यापार समझौते की बातचीत तेज करें। विकास सहायता में समय पर सुपुर्दगी सुनिश्चित करें। परियोजनाओं के कार्यान्वयन में नौकरशाही बाधाओं को दूर करें। डिजिटल संपर्क को क्षेत्रीय स्तर पर बढ़ावा दें—डिजिटल भुगतान, ई–गवर्नेंस, साइबर सुरक्षा आदि।

सुरक्षा सहयोग: आतंकवाद–रोधी खुफिया साझेदारी तंत्र को संस्थागत बनाएँ। समुद्री सुरक्षा में क्षेत्रीय सहयोग (हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी, आईओआरए) को मजबूत करें। साइबर सुरक्षा और आपदा प्रबंधन में संयुक्त अभ्यास करें।

सॉफ्ट पावर का विस्तार: सांस्कृतिक आदान–प्रदान, छात्रवृत्तियाँ और लोक–संपर्क बढ़ाएँ। भारत के लोकतांत्रिक मॉडल और बहुलवादी समाज को प्रदर्शित करें। बॉलीवुड, योग, आयुर्वेद और भारतीय शिक्षा संस्थानों की पहुँच बढ़ाएँ।

चीन–रणनीति: चीन को सैन्य रूप से नियंत्रित करने की जगह आर्थिक विकल्प प्रदान करें। "गुणवत्ता बुनियादी ढाँचा" और "सतत वित्तपोषण" पर जोर दें। पड़ोसियों को यह विश्वास दिलाएँ कि भारत का मॉडल पारदर्शी, लोकतांत्रिक और दीर्घकालिक है।

पाकिस्तान–दृष्टिकोण: "आतंकवाद समाप्त होने तक कोई बातचीत नहीं" की कठोरता से बाहर निकलें। ट्रैक–टू कूटनीति, व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करें। दीर्घकालिक शांति के लिए लोगों के बीच संपर्क बढ़ाना जरूरी है।

घरेलू राजनीति प्रबंधन: द्विदलीय सहमति बनाएँ और विदेश नीति को चुनावी राजनीति से अलग रखें। मीडिया और जनमत को जिम्मेदार बनाने के लिए पारदर्शी संवाद करें।

भविष्य की संभावनाएँ

इंडो–पैसिफिक दृष्टिकोण में दक्षिण एशियाई पड़ोसियों को कैसे एकीकृत करें, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है। जलवायु परिवर्तन, महामारी और साइबर सुरक्षा जैसे अंतर–राष्ट्रीय खतरे क्षेत्रीय सहयोग के लिए नई जमीन प्रदान करते हैं। इन मुद्दों पर संयुक्त कार्रवाई से विश्वास निर्माण हो सकता है।

भारत को अपनी "पड़ोसी–केंद्रित नीति" को निरंतर विकसित करना होगा। रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए, क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना और चीन की चुनौती का सामना करनाकृये तीनों लक्ष्य एक साथ हासिल करने होंगे। यह आसान नहीं है, परंतु एक स्थिर, समृद्ध और सहयोगात्मक दक्षिण एशिया भारत के राष्ट्रीय हित में है।

सन्दर्भ

1. जयशंकर, सुब्रमण्यम, "परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति", प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2024, पृ० 45–67।
2. यादव, आर. एस., "दक्षिण एशिया की राजनीति और भारत", राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2019।
3. सिंह, उदयभान, "अन्तर्राष्ट्रीय संबंध", मैकग्रा हिल, चेन्नई, 2023, पृ० 89–112।
4. मल्होत्रा, वी.के., "भारतीय विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार", सुजॉय पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2020, पृ० 56–78।
5. मिश्रा, राजेश, "भारतीय विदेश नीति भूमण्डलीकरण के दौर में", ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, 2022, पृ० 78–95।
6. पंत, हर्ष, "भारत की पड़ोसी नीति: गुजराल सिद्धांत से मोदी डॉक्ट्रिन तक", इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल, खंड 11, अंक 1, 2016, पृ० 23–41।
7. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, "वार्षिक रिपोर्ट 2022–23", विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली, 2023।
8. चटर्जी मिलर, मीरा, "गलवान के बाद भारत–चीन संबंध", फॉरेन पॉलिसी, 28 जून, 2021।
9. विस्वाल, तपन, "अंतरराष्ट्रीय संबंध", ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, 2022, पृ० 67–89।
10. बेहेरा, लक्ष्मण, "भारत–पाकिस्तान संबंध: शांति की संभावनाएँ", स्ट्रैटेजिक एनालिसिस, खंड 43, अंक 5, 2019, पृ० 398–415।
11. दास, पुष्पिता, "आतंकवाद–रोधी सहयोग में भारत–बांग्लादेश साझेदारी", ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, 8 अगस्त, 2019।
12. जैन, राजीव, "श्रीलंका के आर्थिक संकट में भारत की भूमिका", वर्ल्ड फोकस मैगज़ीन, खंड 43, अंक 7, 2022, पृ० 34–50।
13. शर्मा, राजकुमार, "सार्क और दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की चुनौतियाँ", वर्ल्ड फोकस मैगज़ीन, खंड 42, अंक 3, 2021, पृ० 45–62।
14. साहनी, वरुण, "बिम्सटेक: सार्क का विकल्प या पूरक?", साउथ एशियन सर्वे, खंड 25, अंक 2, 2018, पृ० 201–218।
15. डोभाल, अजीत, "हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री रणनीति", मैरीटाइम अफेयर्स जर्नल, खंड 13, अंक 1, 2017, पृ० 1–15।
16. गुप्त, शेखर, "क्या भारत चीन की बेल्ट एंड रोड पहल का मुकाबला कर सकता है?", द प्रिंट, 12 मई, 2018।
17. वाजपेयी, अरुणोदय, "भारत–चीन संबंध: प्रतिस्पर्धा और सहयोग का द्वंद्व", भारतीय विदेश नीति जर्नल, खंड 15, अंक 2, 2022, पृ० 78–95।
18. मोहन, सी. राजा, "इंडो–पैसिफिक युग में भारत की भूमिका", दि हिंदू, 15 जनवरी, 2020।
19. गांगुली, सुमित और थॉम्पसन, विलियम, "उन्नत भारत और इसकी राज्य क्षमता", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2017।
20. ओझा, विवेक, "नेबरहुड फर्स्ट से रणनीतिक स्वायत्तता तक: मोदी सरकार की विदेश नीति", राजनीति विज्ञान समीक्षा, खंड 18, अंक 4, 2021, पृ० 112–130।